ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-10* January-2021
Anthology : The Research

आदिवासी प्रान्त मेरवाड़ा में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी का औपनिवेशिक प्रभाव

Colonial Influence of British East India Company in Tribal Province of Merwara

Paper Submission: 04/01/2021, Date of Acceptance: 24/01/2021, Date of Publication: 25/01/2021

जितेन्द्र कुमार मारोठिया
सह–आचार्य,
इतिहास विभाग,
सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

सारांश

उन्नीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक में राजपूताना के हृदयस्थली क्षेत्र अजमेर के सीमावर्ती क्षेत्रों के मध्य स्थित आदिवासी क्षेत्र मेरवाड़ा में 1823 ई. के बाद ब्रिटिश सरकार ने सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक सुधारों के प्रारम्भिक प्रयास किये जो इस क्षेत्र के क्रमिक विकास के आधारभूत कारण बन गये। अंग्रेज शासित मेरवाड़ा का प्रबन्ध अजमेर के चीफ कमिश्नर द्वारा किया गया। यहाँ पर पानी की कमी तथा पहाड़ी भू–भाग के कारण लूटेरी प्रवृतियॉ विकसित होने लगी। जिसे ब्रिटिश सरकार ने 1823 ई. में मेरवाड़ा बटालियन स्थापित कर शिक्षा के द्वारा यहाँ के संकीर्ण परम्परागत रीति–रिवाजों में परिवर्तन कर क्रमिक सुधार किया। आर्थिक समृद्धि ने इस क्षेत्र को व्यापारिक केन्द्र के रूप में विकसित किया। 1854 ई. में अस्पताल, 1862 ई. में ब्यावर नगरपालिका, 17 जून, 1889 ई. को कृष्णा कॉटन मील, 1 अगस्त, 1908 ई. को द एडवर्ड स्पिनिंग मील, 29 जनवरी, 1925 ई. महालक्ष्मी मील इसके अतिरिक्त मेरवाड़ और मारवाड़ के सहयोग से ऊन, कपास, घी, गुड़, शक्कर, दाना–मैंथी तथा तिलहन आदि की फैक्ट्रियॉ स्थापित की गई। मेरवाड़ा का व्यापार कपास, ऊन और तेल के संबंध में उत्तरी व पश्चिमी भारत तक विस्तृत हो गया जिसने यहाँ के क्रमिक विकास को उत्तरोत्तर विकासशील व गतिशील बनाया।

In the second decade of the nineteenth century, after the 1823 AD in the tribal region of Merwara, situated between the border areas of Ajmer, the heartland area of Rajputana, the British government made initial efforts for social, economic and educational reforms which became the fundamental reasons for the gradual development of the region. . The British-ruled Merwara was managed by the Chief Commissioner of Ajmer. Due to lack of water and hilly terrain, looter trends started to develop here. The British government established Merwara Battalion in 1823 and made a gradual improvement by changing the narrow traditional customs of the place through education. Economic prosperity developed the region into a trading center. Hospital in 1854 AD, Beawar Municipality in 1862 AD, Krishna Cotton Mile on June 17, 1889 AD, The Edward Spinning Mile on August 1, 1908 AD, Mahalaxmi Mile on January 29, 1925 AD Besides Merwad and Marwar With the help of factories of wool, cotton, ghee, jaggery, sugar, granule and oilseeds, etc. were established. Merwara's trade in cotton, wool and oil spread to Northern and Western India, which made the gradual development here dynamic and dynamic.

मुख्य शब्द : मेरवाड़ा, आर्थिक विकास, ,परम्परागत रीति–रिवाज, व्यापारिक केन्द्र, मेरवाड़ा बटालियन।
Merwara, Economic Development, Traditional Rituals, Business Center, Merwara Battalion

प्रस्तावना

राजपूताना में मेवाड़–मारवाड़ और अजमेर के सीमावर्ती क्षेत्रों के मध्य स्थित मेरवाड़ा–अजमेर के साथ मिलकर राजपूताना रियासतों को नियन्त्रित करने वाले औपनिवेशिक ब्रिटिश केन्द्रीय प्रांत कहलायें। राजपूताना का इतिहास शौर्य, साहस, देशभक्ति और आत्म–त्याग का इतिहास रहा है। मेवाड़ के ब्रिटिश पोलिटिकल एजेन्ट कर्नल जेम्स टॉड ने लिखा है ''राजस्थान में कोई छोटा राज्य भी ऐसा नहीं है, जिसमें यूरोप की थर्मोपली जैसी रणभूमि न हो और शायद ही

ऐसा कोई नगर मिले जहाँ ग्रीक और लियोनिडास के समान मातृभूमि पर बलिदान होने वाला वीर पुरूष उत्पन्न न हुआ हो।''[1] ब्रिटिश काल में राजपूताना का केन्द्रिय क्षेत्र अजमेर–मेरवाड़ा दो औपनिवेशिक प्रांतो में विभक्त था। उत्तर से दक्षिणी तक अजमेर जिले की लम्बाई 80 मील तथा चौड़ाई 50 मील थी। मेरवाड़ा जिला लम्बा, पतला और पहाड़ी पट्टी से निर्मित था। इसकी लम्बाई 70 मील तथा चौड़ाई 1 से 15 मील थी। अजमेर एवं मेरवाड़ा जिलों का कुल क्षेत्रफल 2,711 वर्गमील था, जिसमें से 2,700 वर्गमील में अजमेर तथा 641 वर्गमील में मेरवाड़ा स्थित था।[2] मेरवाड़ा मेरों का निवास स्थान तथा एक पहाड़ी भू–भाग है। अरावली पर्वत श्रृंखला इस क्षेत्र की मुख्य पहाड़ी श्रृंखला है। यह अजमेर के दक्षिण से पूरे राजस्थान में फैली हुई है। अजमेर के दक्षिण से यह दो श्रेणियों में विभाजित होकर मेरवाड़ा के अधिकांश भाग को ढ़कती है, यह भाग जंगलों से परिपूर्ण है। मेरवाड़ा का क्षेत्रफल 641 वर्गमील था। मेरवाड़ा, उत्तर में मारवाड़ (जोधपुर) और अजमेर, दक्षिण में मेवाड़ (उदयपुर), पूर्व में अजमेर और मेवाड़ तथा पश्चिम में मारवाड़ की भूमि से घिरा हुआ था, फलतः ब्रिटिश कम्पनी सरकार के लिए मेवाड़ तथा मारवाड़ रियासतों को नियन्त्रित करने के लिए मेरवाड़ा क्षेत्र को अधिकार में रखना अनिवार्य हो गया था। अजमेर के दक्षिणी भू–भाग का पर्वतीय क्षेत्र मेरवाड़ा मेरों की मातृभूमि थी। पर्वतीय एवं घने वनों से आच्छादित होने के कारण मेरवाड़ा सदियों से दुर्गम क्षेत्र के रूप में जाना जाता रहा है। यह क्षेत्र समाज विरोधी तत्वों के लिए एक सुरक्षित शरणस्थली थी । चोरी, लूटमार, की प्रवृतियों तथा अत्याचारों के कारण निकटवर्ती पड़ौसी रियासतों में आदिवासी मेरों का आतंक फैला हुआ था। अजमेर में भी वे लूटपाट करने लगे थे।[3] यहाँ का कृषि व्यापार चौपट हो गया और आंतकी प्रवृत्ति के कारण व्यापारी अन्यत्र चले गये। ब्रिटिश संरक्षण की प्राप्ति के बाद परिवर्तित राजनीतिक वातावरण में मेर आदिवासी जाति ने लूटपाट को अपनी आजीविका का साधन बना लिया। फ्रांस के यात्री विक्टर जैकमेन्ट 1832 ई. में लिखते है कि ''यह क्षेत्र 1818 ई. से पूर्व वनों से आच्छादित था और यहां के निवासी प्रायः लूटमार करते थे।इसी कारण इस क्षेत्र पर न तो राजपूतों का शासन स्थायी हो सका और न ही मुगलों का शासन था। यह अपने आप में एक स्वतन्त्र क्षेत्र ही बना रहा था।[4] अंग्रेजों से पहले मेरों का क्षेत्र किसी भी राजनैतिक अधिकार के सीधे नियन्त्रण में नहीं था। जबकि, इसके कई पर्वतीय क्षेत्र अजमेर सूबे, मेवाड़ और मारवाड़ राज्यों में सम्मलित थे। 5 नवम्बर, 1818 ई. में ब्रिटिश कम्पनी सरकार की ग्वालियर के शासक सिंधिया के साथ हुई सन्धि के परिणामस्वरूप राजपूताना के केन्द्रिय क्षेत्र अजमेर पर ब्रिटिश कम्पनी का अधिकार हो गया।[5] जो, 15 अगस्त 1947ई. को भारत के स्वतन्त्र होने के बाद भारतीय संसद में पारित राज्य पुनर्गठन आयोग, 1956 ई. के अन्तर्गत अजमेर–मेरवाड़ा प्रान्त को राजस्थान में 1 नवम्बर, 1956 ई. को विलिनीकरण कर राजस्थान राज्य में सम्मिलित किया गया। वर्तमान में मेरवाड़ा का यह विस्तृत क्षेत्र का राजस्थान राज्य के अन्तर्गत अजमेर जिले में सम्मलित कर लिया गया, जो ब्यावर के नाम से जाना जाता है।

1756–1758 ई. तक मेरवाड़ा के क्षेत्र रामसर, खरवा, भिनाय और मसूदा पर जयपुर नरेश रामसिंह का अधिकार था और 1758–1791 ई. तक यह क्षेत्र मराठों के अधीनस्थ रहे। 1791 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने मराठा सरकार के कहने पर जनरल पैरो को 1818 ई. तक अजमेर का सूबेदार बनाया। 25 जून, 1818 में अंग्रेजों ने अजमेर प्रान्त का शासन सम्भाला। ब्रिटिश काल के समय यह भू–भाग 8 परगनों और 534 ग्रामों में विभक्त था। इस क्षेत्र में अधिकांशतः जमींदार राठौड़ थे। मेर और चीता जाति के लोग अजमेर जिले के अन्तिम भाग में निवास करते थे।[6] 28 जुलाई, 1818 को विल्डर अजमेर का प्रथम अधीक्षक नियुक्त किया गया। यह जिला सतत् युद्धों से बर्बाद हो चुका था, अतः विल्डर व उसके उत्तराधिकारियों ने कम्पनी के आर्थिक स्वहित लाभ में वृद्धि करने के प्रयास किये। अंग्रेजों ने राजपूताना रियासतों पर अपना प्रभाव स्थापित करने के लिए अजमेर को अपना केन्द्र बनाया[7] और सीमावर्ती आदिवासी क्षेत्र मेरवाड़ा की मेर जाति को संगठित कर क्रमिक विकास हेतु प्रयास प्रारम्भ किये। अंग्रेजों के आगमन से पूर्व कोई भी शक्ति मेरों को पराजित नहीं कर पायी थी। अपनी लूटमार की प्रवृतियों के कारण निकटवर्ती पड़ौसी रियासतों के साथ अजमेर पर भी उनके धावे होने लगे थे। अजमेर के सुपरिन्टेन्डेन्ट विल्डर ने मेरों को समझा–बुझा कर शान्ति स्थापित करने का प्रयत्न किया था। उसने मेरवाड़ा के केन्द्रिय क्षेत्र झाक, श्यामगढ़, लूलवा में रहने वाले मेरों से 27 जनवरी, 1819 ई. को एक समझौता किया गया फिर भी लूटपाट की घटनाएं जारी रही और स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ।[8] अतः विल्डर ने मेरों पर नियन्त्रण हेतु अजमेर नगर से लगभग 14 मील दूर नसीराबाद में 20 नवम्बर, 1818 ई. को दिल्ली रेजीडेन्ट आक्टरलोनी ने सैनिक छावनी स्थापित की[7] जिसका उद्देश्य मेरवाड़ा क्षेत्र के पहाड़ों और जंगलों में जाकर मेरों का दमन करना था। मेरों ने 15वीं शताब्दी में इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया। ये लोग आलसी व शंकालू प्रवृत्ति के थे किन्तु विश्वास पात्र व स्वामी भक्त होते थे। इसी कारण अंग्रेज के प्रथम सुपरिन्डेन्ट विल्डर ने 27 जनवरी, 1819 ई. को किये गये समझौते के अनुसार उनको लूटमार, चोरी, डकैती आदि से दूर रहना था। लेकिन मेरों ने इस समझौते को तोड़ दिया था। अतः मार्च 1819 में विल्डर ने नसीराबाद सेना की सहायता से मेरों पर नियन्त्रण किया। मेरवाड़ा में निगरानी रखने के लिए पुलिस चौकियां भी स्थापित की गई। इसकी प्रतिक्रिया में मेरों ने जनवरी, 1820 ई. में अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह कर दिया।[9] पुनः 1820 ई. में अंग्रेजों ने विद्रोह को दबाकर उन्हें नियंत्रित किया गया।[10] इस प्रकार अजमेर जिले के अधीन मेरवाड़ा क्षेत्र अंग्रेजों के अधिकार में आ गया। 1818 में मेरवाड़ा का क्षेत्र ब्रिटिश, मेवाड़ एवं मारवाड़ राज्यों में विभाजित था। ब्रिटिश क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत चार परगने थे– (1) ब्यावर, (2) झाक, श्यामगढ़ (3) बहेर, बार और कोकड़ा (4) बाहेलन।[11] इस भाग को अजमेर में सम्मिलित किया गया था। इसमें 143 गाँव एवं 63 छोटे गाँव थे। ब्रिटिश शासन से पूर्व में

ये गुर्जरों के अधीन थे। मेरवाड़ा क्षेत्र का अधिकांश खेती योग्य व मैदान भाग इन्हीं परगनों में था। मई, 1823 ई. को मेवाड़ राज्य के शासनान्तर्गत तीन परगने थे – टॉडगढ़, दिवेर और सारोठ। इनमें 76 गाँव एवं 13 छोटे गाँव थे। टॉडगढ़ व दिवेर घनी आबादी के क्षेत्र थे। मारवाड़ राज्य के अधीन मेरवाड़ा में सबसे कम भूमि थी, इसमें केवल दो परगने थे– चांग और कोट किराना। इसमें 21 गाँव व चार बगीचे थे। मेरवाड़ा में अंग्रेज, मेवाड़ और मारवाड़ की तिहरी शासन व्यवस्था दोषपूर्ण थी। एक भाग के अभियुक्त दूसरे भाग में शरण लेते थे। अतः 1823 ई. में मेरवाड़ा के तीनों हिस्से एक ब्रिटिश अधिकारी के अन्तर्गत रखे गए, जो पूर्ण मेरवाड़ के प्रशासन की देखभाल अजमेर–मेरवाड़ा के प्रान्त के अन्तर्गत करता था।[12] प्रशासन की दृष्टि से मेरवाड़ा को ब्रिटिश, मेवाड़ एवं मारवाड़ राज्यों में बांट दिया गया। लेकिन ब्रिटिश अधिकारियों की यह व्यवस्था दोषपूर्ण सिद्ध हुई।[13] अतः ब्रिटिश सरकार ने मेरों के विद्रोह की पुनरावृति को रोकने के लिये विभाजित मेरवाड़ा को संगठित कर उस पर ब्रिटिश सैनिक, आर्थिक एवं राजनैतिक नियंत्रण स्थापित किया। जिसके परिणामस्वरूप मेरों में सामाजिक एवं आर्थिक क्रमिक विकास संभव हो सका। मेरवाड़ा बटालियन अंग्रेज प्रशासकों ने मेरों को रोजगार देने एवं उनके शौर्य एवं साहस का उचित उपयोग करने के लिये उन्हें सेना में सिपाही के रूप में भर्ती करने का निर्णय लिया। यह निर्णय मेरों की लुटेरेपन की प्रवृत्ति से विमुक्त करने तथा उन्हें सुसंस्कृत करने की ओर महत्वपूर्ण कदम था। मेरवाड़ा बटालियन बनाने के लिये दिल्ली रेजीडेन्ट सर डेविड आक्टरलोनी ने 6 नवम्बर, 1821 ई. को गवर्नर जनरल को एक प्रस्ताव भिजवाया। प्रस्ताव में उन्होनें स्पष्ट किया कि दुःसाहसी एवं लूट के पेशों में रह रहे मेरों को इस माध्यम से रोजगार देने के साथ–साथ उनकी सेवाओं का सही उपयोग भी किया जा सकेगा। यह प्रस्ताव उच्च प्रशासकों द्वारा 1822 ई. में स्वीकार कर लिया गया। 22 जून, 1822 ई. को गर्वनर जनरल ने मेरवाड़ा स्थानीय बटालियन बनाने की आज्ञा दे दी। नसीराबाद छावनी के केप्टिन हॉल को ये काम सौंपा गया। जिसने मेरों की भर्ती की गई। इस टुकड़ी को पुराना ब्यावर, जो अजमेर के दक्षिण–पश्चिम में करीबन 30 मील की दूरी पर था, के पास छावनी बनाकर रखा गया।[14] 1823 ई में रेजीमेन्ट का नाम 14वीं (मेरवाड़ा) स्थानीय बटालियन में बदल दिया गया। 1826 ई. में पुनः नौवीं (मेरवाड़ा) स्थानीय बटालियन और तत्पश्चात् 1843 ई. में मेरवाड़ा बटालियन के नाम से संगठित की गई। 1839 ई. में मेरवाड़ा बटालियन मारवाड़ के ठाकुर चिम्मनसिंह के विरूद्ध कोटकिराणा (तहसील टाटगढ़) युद्ध में की गई। ठाकुर चिम्मनसिंह, जो मारवाड़ से भागा हुआ लुटेरा था, यह प्रायः कोटकिराणा में लूटमार करता था। इस बटालियन के सैनिकों ने चिम्मनसिंह और उसके साथियों को मार डाला। मेरवाड़ा बटालियन के केवल आठ सैनिक मारे गये। दूसरे आक्रमण में मेरवाड़ा बटालियन की टुकडी ने डूंगरसिंह नामक मारवाड़ के बागी ठाकुर को गिरफ्तार किया। इस अवसर पर कर्नल डिक्सन और मेजर कोरक्टर ब्रिगेडियर रिचकी ने फौज की प्रशंसा की।[15] 1857 ई. के सैनिक विद्रोह के समय मेरवाड़ा बटालियन पूर्णरूप से अंग्रेजों की भक्त रही तथा अजमेर में अंग्रेजों की सत्ता बनाये रखने में मदद की। वाइसराय लार्ड मेयो(1822–1872 ई.) ने इस बटालियन के स्वरूप में परिवर्तन करके इसे सैनिक कोर के रूप में पुनःर्गठित किया तथा 1871 ई. में इसका मुख्यालय ब्यावर से बदलकर अजमेर कर दिया। अंग्रेज गवर्नर जनरल लॉर्ड लिटन(1876–1880ई.) के आदेश पर 1878–79 ई. में इस बटालियन को सैनिक अभियान पर काबुल भेज दिया गया। वहां पर इस बटालियन ने अदम्य साहस व शौर्य का परिचय दिया। 1891 ई. में इस बटालियन के सैनिकों ने अजमेर जिले के मेर किसानों के अन्न विद्रोह के दमन में भाग लिया। 1903 ई. में ब्रिटिश भारतीय सेनाओं के पुनःनिर्धारण के समय इस सैनिक टुकड़ी का नाम बदलकर इसे 44वीं मेरवाड़ा पैदल सेना कहा जाने लगा। अंग्रेजों ने मेरों को मेरवाड़ा बटालियन में भर्ती कर एक अनुशासित सेना तैयार की थी। इन अनुशासित ब्रिटिश भक्त मेर सैनिकों पर अंग्रेज सरकार संकट के समय विश्वास कर सकती थी। बहुत ही कम समय में इन मेर टुकडियों को सैनिक तत्परता, चुस्ती और अन्य सैनिक नियमों के अनुकूल बना दिया गया था। इस तरह के अनुशासित सैनिकों ने मेरों को यथासमय जिम्मेदारी निभाना, स्वच्छता एवं आदेशों का पालन करना और सहज व्यवहार सिखाया गया तथा अधिकारियों के प्रति विश्वास की भावना उत्पन्न की। मेरवाड़ा बटालियन ने मेरों को शान्ति एवं अनुशासन का अग्रदूत बना दिया। उनमें आवश्यक श्रम, संयम व शान्ति के प्रति लगाव बढ़ने लगा। उनके व्यवहार के कारण अंग्रेज अफसर प्रभावित एवं प्रसन्न हुए। उनके भत्तों एवं मासिक वेतन 15 रूपये के स्थान पर 28 रूपये कर दिया गया। प्रति मास वेतन और पेंशन के रूप में उनकी आमदनी मेरों के घरों में आने लगी। इस आर्थिक सहायता से उन्होनें खेती में अच्छी उन्नति की। इसके अतिरिक्त मेरों की मेहनत से स्थानीय आबादी में कुऐं खोदने एवं मेड़ बनाने आदि के प्राथमिक कार्ये सम्पन्न हो सके। इसके परिणाम स्वरूप मेर समुदाय में शीघ्र ही परिवर्तन परिलक्षित होने लगे। इस प्रकार बटालियन मेरों के लिये एक प्रकार का प्रशिक्षण का केन्द्र बन गया। जहाँ सभ्य जीवन और आज्ञा पालन की शिक्षा मिलती थी। बटालियन में निवास के समय सभ्य आदतें और शिष्टाचार का प्रशिक्षण प्राप्त कर जब मेर घर लौटते तो उनके ग्रामवासी उनकी शिक्षा से प्रभावित होते थे। इस प्रकार ब्रिटिश सरकार की स्वार्थता से प्रेरित मेरवाड़ा बटालियन ग्रामीणों को प्रगति की ओर ले जाने में काफी लाभदायक सिद्ध हुई। 1903 ई. में बम्बई सेना की 3 रेजीमेन्ट, जिन्हें बाद में 119, 120 वीं एवं 122 वीं राजपूताना इन्फेन्ट्री के नाम से जाना जाने लगा। इनमें प्रत्येक दो कम्पनी में मेरों की भर्ती की जाने लगी।[16]

मेरों में सामाजिक सुधार

लूटमार व्यवस्था, दास प्रथा, कन्या वध, महिलाओं का क्रय–विक्रय जैसी सामाजिक कुरितियां भी मेरों में बहुलता में प्रचलित थी। अंग्रेजों ने मेरों में लूटमार व्यवस्था समाप्त कर तथा मेरवाड़ा बटालियन द्वारा उनमें अनुशासन उत्पन्न कर, इन कुरीतियों को समाप्त करने का

प्रयत्न किया। मेरवाड़ा के अधीक्षक कर्नल हेनरी हॉल (1823–1836 ई.) तथा कर्नल डिक्सन (1836–1857 ई.) का इसमें महत्वपूर्ण योगदान रहा। कर्नल हॉल व डिक्सन को मेरवाड़ा के विकास में ब्रिटिश केन्द्रिय सरकार का पूर्ण स्वतंत्र अधिकार प्राप्त था। उन्होनें कठिन परिश्रम से लूटमार की प्रवृतियां कम की, मेरवाड़ा बटालियन का संगठन किया और आवागमन हेतु मेरवाड़ा में सडकें बनवाई। इस प्रकार मेरवाड़ा में एक व्यवस्थित सरकार की स्थापना की जा सकी। उन्होनें मेरों को भ्रष्ट और दूषित आदतों को त्यागने हेतु तैयार किया। इसके साथ ही मेरों की उनकी पंचायतों के द्वारा सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने के लिए तैयार किया। पंचायत ने दास प्रथा, कन्या वध, महिलाओं का क्रय–विक्रय आदि कुरितियों को पूर्णरूप से समाप्त कर दिया। मेर पंचायत की कार्य प्रक्रिया साधारण थी जो मेरों को सन्तोषजनक प्रतीत हुई।[17] अंग्रेजों के आगमन से पूर्व दो अमानवीय सामाजिक परम्परा के अन्तर्गत लड़कियों की बाल हत्या और औरतों को बेचने की प्रथा प्रचलित थी, उसे काफी हद तक प्रतिबंधित की जा सकी। दोनों अपराध अपने मूल कारण विवाह सम्बन्धों में भारी व्यय के कारण एक दूसरे से जुड़े हुए थे। राशि का भुगतान पुरूषों की ओर से अधिक होता था। जिसे परिवर्तित नहीं किया जा सकता था। यह गरीब व धनवान दोनों के लिए समान था। महिलाओं की सामाजिक स्थिति का अनुमान इस बात से लगाया जाता है कि वह पुरूष की सम्पत्ति समझी जाती थी तथा उन्हें भेड़–बकरी जानवरों की तरह बेचा जा सकता था। यहाँ तक कि एक बेटा अपने पिता की मृत्यु के बाद माँ को बेचने का हक रखता था। इसके मूल में यही भावना काम करती थी कि उसकी माँ को प्राप्त करने में उसके पिता ने नाना को अच्छी रकम दी थी। अतः बेटे को यह हक था कि वह अपनी माँ को बेचकर वह रकम प्राप्त कर सकता था। अंग्रेजी शासन की मेरवाड़ा में स्थापना के बाद कन्या वध और महिलाओं का क्रय–विक्रय लगभग समाप्त हो गया। विवाह के लिये स्त्रियों की स्वीकृति प्राप्त करना आवश्यक हो गया और उनकी इच्छा का आदर किया जाने लगा। उन्हें मात्र पशु समझने पर रोक लगाई गयी। कन्या वध पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया गया। निःसन्देह, अनेक बालिकाओं का गुप्त रीति से बलिदान कर दिया जाता था क्योंकि इस विनाश की जाँच हेतु सुविधायें नहीं थी। अतः कन्या वध को जड़ से समाप्त करने के लिये वधू मूल्य में कमी कर दी गयी। कर्नल डिक्सन में 2 जून, 1854 ई. को एक कानूनी आदेश द्वारा कन्या वध और कन्या विक्रय पर कानूनी रोक लगा दी तथा भारी जुर्माना व सम्पत्ति के अधिकार से वंचित करने की धमकी देकर इस आदेश को मानना के लिये बाध्य किया गया। इसका उल्लंघन करने पर जुर्माने का प्रावधान किया गया। विधवा के पुनर्विवाह का भी प्रावधान रखा गया।[18] पंचायत के अनुसार पति की मृत्यु के बाद विधवा पुनर्विवाह करना चाहती थी तो उसके पुत्रों और पुत्र न होने पर उसके भाईयों को 200 से 500 रूपये का भुगतान करना पड़ता था। यदि वह पुनर्विवाह के लिए तैयार नहीं होती थीं तो यह माना जाता था कि वह परिवार में मुखिया में रूप में रह सकती थी। मेर समाज ने विधवा को एक कुंवारी कन्या से भी उच्च श्रेणी मे रखा। विधवा हेतु वर मूल्य राशि 200 से 500 रूपये थी, जबकि कुंवारी कन्या के लिए 106 रूपये थी। मेरों में कन्या वध, दास प्रथा, औरतों का व्यापार, डाकन प्रथा समाप्त करने में अंग्रेजों को सफलता मिली। धीरे–धीरे उनमें सुधार होने लगे। मेरवाड़ा में शान्ति स्थापित हुई तथा साथ ही पड़ोसी रियासतें जोधपुर और उदयपुर राज्यों में उनकी लूटमार बन्द हो गयी।[19]

अध्ययन के उद्देश्य

1. आदिवासी ब्रिटिश प्रान्त मेरवाड़ा की भौगोलिक परिस्थितियों से अवगत कराना ।
2. मेरवाड़ा प्रान्त का ऐतिहासिक विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
3. मेरवाड़ा प्रान्त पर ब्रिटिश सरकार की गतिविधियों का मूल्यांकन करना।
4. ब्रिटिश सरकार द्वारा स्वयं के हितार्थ व रक्षार्थ संगठित मेरवाड़ा बटालियन के सैनिकों द्वारा स्थानीय मेर समाज में किये गये सुधारात्मक परिवर्तनों का मूल्यांकन करना।
5. आदिवासी ब्रिटिश प्रान्त मेरवाड़ा में ब्रिटिश कम्पनी के औपनिवेशिक प्रभाव का वर्णन करना।

निष्कर्ष

मेरों में प्रचलित सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने में अंग्रेज अधिकारियों ने दृढ़ता, साहस और कार्यकुशलता का परिचय दिया। मेरवाड़ा पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित करने के पश्चात् अंग्रेजों ने मेरों में सुसंस्कृतिकरण के लिये इनमें सामाजिक सुधार प्रारम्भ किये तथा मेरवाड़ा बटालियन में सैनिक के रूप में रोजगार दिया। इसके साथ ही मेर समुदाय की लूट–खसोट की प्रवृत्ति में परिवर्तन करने के लिये अंग्रेजों ने उन्हें कृषि के लिये सुविधायें तथा ब्यावर नगर बसा कर उनकी कृषि की पैदावार को बेचने के लिये मण्ड़ी उपलब्ध की। कृषि पैदावार का उचित मूल्य प्राप्त हो, गाँव के महाजनों के शोषण से बचाने तथा रोजगार उपलब्ध कराने के लिए सुपरिन्डेन्ट मेरवाड़ा कर्नल डिक्सन ने 1 फरवरी, 1836 ई. में मेरवाड़ा के गाँवों के मध्य ब्यावर नगर की स्थापना की। ब्यावर नगर की स्थापना से किसानों को उपज की बिक्री के लिये मण्ड़ी उपलब्ध हो गयी और इसी के साथ महाजनों के अत्याचारों से भी मुक्ति मिल गयी, जिससे कृषि पैदावार में बढ़ोत्तरी होने लगी व किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार होने लगा। मेरवाड़ा में यह आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन ब्रिटिश शासन की देन थी। शिक्षा के क्षेत्र में मेरवाड़ा में प्रथम मिशनरी स्कूल ईसाई पादरी जावेज कैरी ने 1832 ई. में प्रारम्भ कर मेरवाड़ा के क्रमिक विकास में सहयोग दिया, जुलाई, 1892 ई. में शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिये केन्द्र खोला गया। 1894 ई. में एक औद्योगिक प्रशिक्षाणालय खोलकर वहाँ बढ़ई, सुनार, व दरी–कम्बल बुनने आदि संबंधित कार्यो का प्रशिक्षण दिया जाने लगा। 1912 ई. में गर्ल्स स्कूल और छात्रावास खोलकर महिलाओं में नवीन ज्ञान का प्रसार कर सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध जागृत किया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. टॉड, कर्नल जेम्स;(1989) य एनल्स एण्ड एण्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान, बुक पब्लिशर्स, जोधपुर, भाग–प्रथम भूमिका पृ. प.पप
2. वाटसन, सी. सी.(1904)य राजपूताना डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स; खण्ड एक (ए) अजमेर–मेरवाड़ा, रॉयल पब्लिकेशन कलकत्ता, पृ. 1–2
3. एचीसन सी.यू.(1969)य ए कलेक्शन ऑफ ट्रीटीज एग्जेमेन्टस एण्ड समद रिलेटिंग टू इण्डिया एण्ड नेबरिंग कन्ट्रीज, खण्ड–5 संधि क्रमांक–8, इण्ड़िया पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ. 406–410
4. फॉड हेनरी,(1905)य द इम्पीरियल गजेटियर्स ऑफ इण्डिया, कलकत्ता, 1905 ई. पृ. 137–173
5. वाटसन, सी.सी. वही, पृ. 2
6. अजमेर कमिश्नर रिकॉर्डस; नं. 115, 5 दिसम्बर, 1818 ई. को दिल्ली रेजीडेन्ट डेविड़ आक्टरलोनी का पत्र।(स्टेट आर्काइव्ज़, बीकानेर)
7. अजमेर कमिश्नर रिकॉर्डस; नं. 115/ए, 5 फरवरी, 1819 ई. को अजमेर सुपरिंटेंडेंट विल्डर द्वारा रेजीडेन्ट दिल्ली को प्रस्तुत रिपोर्ट।(स्टेट आर्काइव्ज़, बीकानेर)
8. डिक्सन,सी.जे.(1850); स्केच ऑफ मेरवारा, लन्दन, पृ. 13–20
9. सारड़ा, हरबिलास (1941); अजमेर हिस्टोरिकल एण्ड डेस्क्रिप्टिव, वैदिक यंत्रालय,अजमेर पृ. 6
10. व्यास, माधोलाल (1953); बीकानेर के स्वतन्त्रता सेनानी, मिलन पब्लिकेशन,जयपुर, 1953, पृ. 4–5
11. सारड़ा, हरबिलास(1941); अजमेर हिस्टोरिकल एण्ड डेस्क्रिप्टिव, वैदिक यंत्रालय,अजमेर ई., पृ. 6–7
12. 1 फरवरी, 1836 ई. में उदयपुर और जोधपुर के मध्य सड़क मार्ग पर स्थित क्षेत्र को नयानगर ब्यावर नगर की कर्नल डिक्सन ने स्थापना की इसका क्षेत्रफल 1. 75 वर्ग मील था तथा यह स्थान मेरवाड़ा बटालियन की छावनी के निकट था। कर्नल डिक्सन के प्रयत्नों से 30–40 झोपड़ियों का बिचडली गांव नगर में परिवर्तित हो गया। अजमेर बाजार के अनुरूप ही ब्यावर नगर का बाजार बनाया गया। जिसमें दुकानें पत्थर की बनाई गयी। तथा इनकी छतें पत्थर की पटिटयों से ढकी गयी। कुछ–कुछ दूरी पर गलियों को मुख्य बाजार की सड़क से मिलाते हुए मोहल्ले बनाये गये। जिसमें विभिन्न जातियों के निवास के लिये मकान बनाये गये। मुख्य बाजार की 75 फिट चोड़ी सड़क बनायी गयी। जिसके दोनों ओर पेड लगाये गये। ब्यावर में बसने वाले व्यापारियों को दो वर्ष की चुंगी की छूट की घोषणा की गयी। ब्यावर नगर में तीव्र गति से प्रगति की ओर यह एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र के रूप में विकसित हुआ। सुरक्षा के लिये 1841 ई. में शहर के चारों ओर दीवार बनायी गयी। जिसमें चार दरवाजे और 32 बुर्ज रखे गये। तीन दरवाजों के नाम पडोसी राज्यों के नाम पर रखे गये। उत्तर की तरफ के दरवाजें का नाम अजमेरी दरवाजा, दक्षिण की तरफ का मेवाड़ी दरवाजा, पूर्व की तरफ का सूरजपोल और पश्चिम की तरफ के दरवाजे का नाम चांग दरवाजा रखा गया। दरवाजे के भीतर की ओर रक्षकों, चुंगी दफ्तर एवं अधिकारियों हेतु स्थान रखा गया। एक मई, 1836 ई. को ब्यावर का बाजार आगमन हेतु खोल दिया गया। इस समय में दो हजार परिवार ब्यावर में निवास कर रहे थे। कर्नल डिक्सन ने 1850 ई. में एक अस्पताल का निर्माण करवाया तथा 1864 ई. में ब्यावर नगर पालिका की स्थापना की गयी। जिससे स्थानीय शासन एवं नगर में सफाई का प्रबन्ध किया गया। व्यापार के आवागमन से ब्यावर को चुंगी के रूप में आमदनी होती थी। इस समय ब्यावर में 500 दुकानें थी। 300 दुकानें व्यापारियों, देशी बैंकर और सर्राफा के अधिकार में थी। ये व्यापारी पड़ोसी राज्यों से आकर ब्यावर में बसे थे। इस प्रकार 19वीं शताब्दी में ब्यावर एक व्यापारिक केन्द्र के रूप में विकसित होने लगा। आर्य मार्तण्ड;(हिन्दी समाचार पत्र), 1 दिसम्बर, 1951, पृ.5 (स्टेट आर्काइव्ज़, बीकानेर)
13. शर्मा, शिवप्रसाद (1951); ए शोर्ट हिस्ट्री ऑफ अजमेर–मेरवाड़ा, वैदिक यंत्रालय, अजमेर, पृ
14. अजमेर कमीश्नर रिकार्ड्सःफाईल न.42/राज.,कैप्टिन हॉल का अजमेर सुपरिन्डेन्ट्स मिस्टर विल्डर को 5 जुलाई, 1822ई को लिखा पत्र।(स्टेट आर्काइव्ज़,बीकानेर)
15. राजपूताना रेजीडेन्सी रिकार्ड्स :न. 103, कमीश्नर अजमेर–मेरवाडा कर्नल डिक्सन का एजीजी राजपूताना हैनरी लारेन्स को 26जून,1856ई. को लिखा पत्र ।(स्टेट आर्काइव्ज़, बीकानेर)
16. फोरेन पोलिटिकल कन्सलटेंशन(सीक्रेट),117/मिलिट्री बटालियन,19 नवम्बर,1904 पैरा 47–49 (नेशनल आर्काइव्ज़, नई दिल्ली)
17. शर्मा, शिव प्रसाद; पूर्व उद्दृत, पृ. 7–8
18. होम पोलिटिकल (मिसलेनियस), न.98/सोशल, अजमेर–मेरवाडा,16 जनवरी,1855 (नेशनल आर्काइव्ज़, नई दिल्ली)
19. आर्य मार्तण्ड़; (हिन्दी समाचार पत्र), 1दिसम्बर,1951,पृ. 5 (स्टेट आर्काइव्ज़,बीकानेर)